Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-35*

ईशावास्य उपनिषद और गांधीवादी पर्यावरणवाद: उपभोक्तावादी संस्कृति की एक दार्शनिक समीक्षा

महेन्द्र सिंह पोर्ते*, सहायक प्राध्यापक,दर्शनशास्त्र विभाग, PMCOE शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन*

1. शोध-सार (Abstract) :vऔद्योगिकीकरण और आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने समकालीन मानव समाज में एक बेलगाम उपभोक्तावादी संस्कृति (Consumerist Culture) को जन्म दिया है। यह संस्कृति प्रकृति को मात्र एक 'उपभोग्य संसाधन' (Commodity) मानती है, जिसके परिणामस्वरूप आज संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता के ह्रास और गंभीर पारिस्थितिक असंतुलन का सामना कर रहा है।

प्रस्तुत शोध-पत्र इस वैश्विक संकट के स्थायी और आंतरिक समाधान हेतु ***'भारतीय ज्ञान प्रणाली' (IKS)*** के अंतर्गत**ईशावास्य उपनिषद**के दर्शन और उस पर आधारित**गांधीवादी पर्यावरणवाद** (Gandhian Ecology) का एक एकीकृत दार्शनिक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। ईशावास्य उपनिषद का ***"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा"*** (त्यागपूर्वक उपभोग) का मंत्र और महात्मा गांधी का **'अपरिग्रह'** व **'ट्रस्टीशिप'** (न्यासधारिता) का सिद्धांत आधुनिक समाज को **'मानव-केंद्रित'** (Anthropocentric) दृष्टिकोण से हटाकर **'पारिस्थितिकी-केंद्रित'** (Ecocentric) दृष्टिकोण की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह शोध स्थापित करता है कि वर्तमान पर्यावरणीय संकट मूलतः एक नैतिक और दार्शनिक संकट है, जिसका समाधान केवल मानवीय चेतना के रूपांतरण और इच्छाओं के संयमन द्वारा ही संभव है।

कुंजी-शब्द (Keywords):ईशावास्य उपनिषद, गांधीवादी पर्यावरणवाद, उपभोक्तावाद, तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा, अपरिग्रह, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), सतत विकास।

2. प्रस्तावना (Introduction) :

इक्कीसवीं सदी में मानव सभ्यता विज्ञान और तकनीक के चरमोत्कर्ष पर है, किंतु विडंबना यह है कि वह अपने स्वयं के अस्तित्व के आधार—अर्थात प्रकृति—के विनाश की कगार पर भी खड़ी है। ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत का क्षरण, नदियों का

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

प्रदूषण और वनों का तीव्र विनाश इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि मनुष्य और प्रकृति के बीच का शाश्वत संतुलन बिगड़ चुका है। इस संकट की जड़ें किसी तकनीकी विफलता में नहीं, बल्कि उस आधुनिक जीवन-दर्शन में निहित हैं जो मनुष्य को ब्रह्मांड का स्वामी और प्रकृति को उसकी दासी मानता है।

पश्चिमी पुनर्जागरण (Renaissance) और औद्योगिक क्रांति के बाद से जिस 'प्रगति' की अवधारणा को वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया गया, वह मूलतः भौतिकवादी और उपभोग-केंद्रित थी। इसके विपरीत, प्राचीन भारतीय वास्तुकला, जीवन-शैली और दर्शन में प्रकृति को एक सजीव, पूजनीय और पूरक सत्ता के रूप में देखा गया है। **भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System)**के अंतर्गत वेदान्त दर्शन, विशेषकर उपनिषदों में पर्यावरण के प्रति अत्यंत सूक्ष्म और उदात्त दृष्टिकोण मिलता है।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के रूप में प्रसिद्ध ***'ईशावास्य उपनिषद'*** लघु आकार का होने के बावजूद दार्शनिक गहराई के मामले में अद्वितीय है। बीसवीं सदी में महात्मा गांधी ने इसी उपनिषद के मूल मंत्रों को अपने जीवन और आंदोलनों का आधार बनाया। गांधी जी का पर्यावरणवाद कोई अकादमिक विमर्श नहीं था, बल्कि वह उपनिषदों के व्यावहारिक आचरण का ही नाम था। प्रस्तुत शोध-पत्र में हम ईशावास्य उपनिषद और गांधीवादी विचारों के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए समकालीन उपभोक्तावादी संस्कृति की दार्शनिक समीक्षा करेंगे

3. आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति: एक दार्शनिक और पारिस्थितिक संकट :

उपभोक्तावाद (Consumerism) वह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था है जो व्यक्ति को निरंतर अधिक से अधिक वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग के लिए प्रेरित करती है। इस संस्कृति में किसी व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा और सफलता का पैमाना इस बात से तय होता है कि वह कितना उपभोग करता है और उसके पास कितनी भौतिक संपत्ति है।

संकट के लक्षण:

1. **संसाधनों का अंधाधुंध दोहन:**उपभोक्तावादी संस्कृति "यूज़ एंड थ्रो" (उपयोग करो और फेंको) के सिद्धांत पर चलती है। इससे कचरे का अंबार लग रहा है और पृथ्वी के सीमित संसाधन तेजी से समाप्त हो रहे हैं।
2. **मानसिक अशांति और असंतोष:**अधिक पाने की अंधी दौड़ ने मनुष्य को भीतर से खोखला और तनावग्रस्त कर दिया है। भौतिक समृद्धि बढ़ने के बावजूद वैश्विक प्रसन्नता सूचकांक (Global Happiness Index) में गिरावट दर्ज की जा रही है।
3. **पारिस्थितिक उपनिवेशवाद (Ecological Colonialism):**विकसित देश अपने उपभोग के लिए विकासशील और गरीब देशों के

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

प्राकृतिक संसाधनों का शोषण कर रहे हैं, जिससे वैश्विक असमानता और पर्यावरण अन्याय बढ़ रहा है।

4. ईशावास्य उपनिषद का पर्यावरण-दर्शन: 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' की प्रासंगिकता

ईशावास्य उपनिषद वैदिक वांग्मय का मुकुटमणि है। इसका प्रथम श्लोक ही पर्यावरण दर्शन की पराकाष्ठा है:

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥"

(ईशावास्य उपनिषद, श्लोक 1)

इस एक श्लोक में संपूर्ण पर्यावरण दर्शन और जीवन जीने की कला समाहित है। इसके दार्शनिक निहितार्थों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

क) सर्वव्यापक ईश्वरत्व और अद्वैत भाव (Cosmic Immanence) :

श्लोक की पहली पंक्ति कहती है—***"ईशावास्यमिदं सर्वं"***—अर्थात इस चलायमान संसार में जो कुछ भी जड़ या चेतन तत्व है, वह सब ईश्वर से व्याप्त है। जब हम प्रत्येक वृक्ष, नदी, पर्वत और जीव में उसी एक परम चेतना का वास देखते हैं, तो हमारे भीतर 'परस्पर संबंध' (Interconnectedness) का भाव जागृत होता है। यह आधुनिक पर्यावरण दर्शन के**'गहन पारिस्थितिकी' (Deep Ecology)**सिद्धांत के समान है, जो मानता है कि प्रकृति के सभी घटकों का अपना आंतरिक मूल्य (Intrinsic Value) होता है, चाहे वे मनुष्यों के लिए उपयोगी हों या न हों।

ख) तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: त्यागपूर्वक उपभोग:

उपनिषद हमें उपभोग से मना नहीं करता, बल्कि उपभोग के तरीके को बदलने की बात करता है। ***"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा"*** का अर्थ है—त्याग के भाव से उपभोग करो। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य को यह समझना चाहिए कि पृथ्वी पर उसका अधिकार स्थायी नहीं है। वह यहाँ एक अतिथि या ट्रस्टी की भांति है। उपभोग करते समय प्रकृति के प्रति कृतज्ञता (Gratitude) का भाव होना चाहिए, न कि स्वामित्व (Ownership) का अहंकार। यह विचार आधुनिक "सतत उपभोग" (Sustainable Consumption) की नींव रखता है।

ग) मा गृधः कस्यस्विद्धनम्: लोभ का निषेध

"मा गृधः" का सीधा अर्थ है—लोभ मत करो। उपनिषद प्रश्न करता है कि "यह धन किसका है?" अर्थात भौतिकसंपदा न तो तुम्हारी है और न सदा तुम्हारे साथ रहेगी। लोभ ही वह मूल कारण है जो मानव को वनों को काटने, नदियों को प्रदूषित करने और पशुओं का शिकार करने के लिए उकसाता है। इस प्रकार, ईशावास्य उपनिषद बाहरी कानूनों के बजाय आंतरिक नैतिक संयम द्वारा पर्यावरण रक्षा की बात करता है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

5. गांधीवादी पर्यावरणवाद: वैदिक दर्शन का व्यावहारिक रूपांतरण

महात्मा गांधी कोई पर्यावरण वैज्ञानिक नहीं थे, लेकिन उनके विचार और जीवन पद्धति उन्हें आधुनिक युग का सबसे बड़ा पर्यावरणविद् बनाती है। गांधी जी का पर्यावरण दर्शन ईशावास्य उपनिषद के सिद्धांतों की व्यावहारिक प्रयोगशाला था।मशहूर इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने गांधी जी को **"पारिस्थितिकी का प्रारंभिक संन्यासी"** (Early Environmentalist) कहा है।

गांधी जी के पर्यावरणवाद के मुख्य स्तंभ निम्नलिखित हैं:

क) आवश्यकता बनाम विलासिता (Need vs. Greed) :

गांधी जी का सबसे प्रसिद्ध कथन आधुनिक उपभोक्तावाद पर सबसे करारा प्रहार है:

"पृथ्वी के पास हर मनुष्य की आवश्यकता (Need) को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन किसी एक मनुष्य के भी लालच (Greed) को पूरा करने के लिए नहीं।"

यह विचार सीधे तौर पर "मा गृधः" (लोभ मत करो) की व्याख्या है। गांधी जी का मानना था कि यदि मानव जाति को जीवित रहना है, तो उसे अपनी इच्छाओं को स्वेच्छा से सीमित करना होगा।

ख) अपरिग्रह (Non-possession) और अस्तेय (Non-stealing) :

गांधी जी के एकादश व्रतों में 'अपरिग्रह' और 'अस्तेय' प्रमुख थे। अपरिग्रह का अर्थ है—आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना। गांधी जी का मानना था कि यदि हम अपनी जरूरत से ज्यादा चीजें अपने पास रखते हैं, तो हम वास्तव में किसी अन्य व्यक्ति के हिस्से की चोरी कर रहे हैं। वर्तमान संदर्भ में, यदि अमीर देश और अमीर वर्ग अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन कर रहे हैं, तो वे गरीब देशों और आने वाली पीढ़ियों के हिस्से स्वच्छ पर्यावरण की "चोरी" कर रहे हैं।

ग) ट्रस्टीशिप का सिद्धांत (Theory of Trusteeship) :

गांधी जी ने आर्थिक और सामाजिक न्याय के लिए 'ट्रस्टीशिप' (न्यासधारिता) का सिद्धांत दिया। इसके अनुसार, धनवान व्यक्ति या स्वयं मनुष्य जाति प्राकृतिक संसाधनों की मालिक नहीं है, बल्कि वह समाज और ईश्वर की ओर से उसकी 'ट्रस्टी' (संरक्षक) है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इन संसाधनों का उपयोग केवल अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए करे और शेष को समाज के कल्याण तथा भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखे।

घ) ग्राम स्वराज और स्वदेशी (Gram Swaraj and Swadeshi) :

गांधी जी का 'ग्राम स्वराज' का मॉडल पर्यावरण के अनुकूल था। वे बड़े पैमाने पर मशीनीकृत उत्पादन (Mass Production) के विरोधी थे; वे "जनसाधारण द्वारा उत्पादन" (Production by Masses) के समर्थक थे। उनका मानना था कि विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था और स्थानीय स्तर पर स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने से पर्यावरण पर दबाव कम होता है और

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

कार्बन फुटप्रिंट (Carbon Footprint) न्यूनतम रहता

संदर्भ ग्रंथ सूची (References) :

1. **ईशावास्य उपनिषद**(गीता प्रेस, गोरखपुर संस्करण) – श्लोक 1 की व्याख्या एवं भाष्य।
2. **गांधी, एम. के.** (1927). *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा*. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
3. **गांधी, एम. के.** (1909). *हिन्द स्वराज*. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
4. **गुहा, रामचंद्र** (2000). *Environmentalism: A Global History*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. **नेस, आर्ने** (1989). *Ecology, Community and Lifestyle*. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। (गहन पारिस्थितिकी और उपनिषद की तुलना के संदर्भ में)।
6. **सिंह, डॉ. करण** (1995). *Essays on Hinduism*. रत्ना सागर पब्लिकेशन्स। (भारतीय पर्यावरण चेतना और वेदान्त पर लेख)।
7. **संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) रिपोर्ट**(2022-2024) – सतत उपभोग और उत्पादन पैटर्न (Sustainable Consumption and Production) पर डेटा।
8. **मिश्रा, अनुपम** (1993). *आज भी खरे हैं तालाब*. गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली। (पारंपरिक भारतीय जल प्रबंधन और पर्यावरण चेतना पर)।